Raga of the Month August 2025 Raga Sudharanjani

राग सुधरंजनी

राग सुधरंजनी - इस राग का सृजन पंडित सी. आर. व्यासजी ने किया है। इस रागमे पंचम स्वर वर्जित है; गंधार कोमल लगता है और बाकी सभी स्वर शुद्ध लगते हैं । इसकी जाती षाडव है। वादी मध्यम तथा षडज संवादी है। इस रागका गानसमय रात्रिका दूसरा प्रहर माना गया है।

इस रागका वर्गीकरण कर्नाटक संगीतके मेलकर्ता नंबर २३ गौरीमनोहरीमें किया जा सकता है। हिंदुस्तानी संगीतका राग अंबामनोहरी इस रागसे मिलता जुलता है।

आरोह - सा रे ग़ रे , ग़ म, ध म ध, नि सां। अवरोह - सां नि ध नि, ध , म ग़ रे , ग़ म ग़ रे , सा ।

साधारण चलन - सा, रे ग़ म ,ग़ म ग़रे सा ,रे सा नि़ धनि़ ध़, म़ ध़ नि़ सा , ध़ नि़ सा रे, ग़ म ग़रे सा ।

आज के ऑडीओ मे हम पंडित सतीश व्यासजी ने संतूर पर बजाया हुआ राग सुधरंजनी सुनेंगे।

आभार - पंडित यशवंत महाले.

01-08 -2025.

Link to the list of 170+ Raga of the month articles

@ Archive of ROTM Articles https://oceanofragas.com/Raga_Of_Month_Alphabetically.aspx